सैनिक व संत भारतीय संस्कृति के प्रहरी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

देश की सीमाओं की रक्षा सैनिक करते हैं। कोई देश हमारे देश पर आक्रमण नहीं करें, घुसपैठ न करें इसके जिम्मेदारी का निर्वाह सैनिक और अर्द्धसैनिक बल सीमा पर चौकन्ने रहरक करते हैं। लेह, लद्दाख जैसे बर्फीले स्थानों पर सैनिक चौबीसों घण्टे निगरानी करते हैं। देश की आंतरिक व्यवस्था को सुधारने के लिए पुलिस कार्य करती है। हमारे देश में जल, थल और नभ की रक्षा करने के लिए तीन सेनाओं का गठन किया गया है। तीनों सेनाओं के प्रमुख को सेनापति कहते हैं। वैसे तो भारत का राष्ट्रपति तीनों सेनाओं का प्रमुख होता है। तीनों सेनाएं राष्ट्रपति के अधीन रहती है। अन्य देशों में ऐसा नहीं है। भारत के पड़ौसी पाकिस्तान में समय–समय पर तख्तापलट होता रहता है। वहां का सैनिक सरकार के कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं, किन्तु भारत देश में सेना मर मिटने के लिए तैयार रहती है। बाहरी और भीतरी व्यवस्था दोनों को चुस्त–दुरूस्त बनाये रखने के लिए सैनिक और अर्द्धसैनिक बल तथा पुलिस के जवान जी–जान की परवाह न कर सदैव तत्पर रहते हैं। देश की जनता सन्मार्ग पर चले इसके लिए संतों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है। संत का तात्पर्य है जो शांत रहे। जिसमें स्वार्थ की भावना न हो। संत का जीवन परार्थ और परामार्थ के लिए होता है। स्वार्थी व्यक्ति केवल परिवार तक सीमित रहता है। परार्थ की चेतना मध्यस्थ चेतना है। स्वार्थ की चेतना अधम चेतना है और परमार्थ की चेतना उत्कृष्ट चेतना है। संत समाज से कुछ लेता नहीं बल्कि समाज की बुराई दूर करता है। धन का संग्रह करने वाला संत नहीं होता। संत आत्मसंयमी, परोपकारी और आत्मानुशाषी होता है। समाज से बुराइयों को हटाकर अच्छाइयों की स्थापना करता है। भारत में संतों की पूजा होती है। वे जन कल्याण की भावना से जन प्रेरित होते हैं। यदि सैनिक सीमाओं की रक्षा करता है तो संत देश की आंतरिक व्यवस्था को उपदेशों के माध्यम से सुदृढ़ करता है। संत व्यक्ति का रूपान्तरण करता है। संत अपराधी को निरपराधी बना देता है। संतों की वाणी में अमृत वर्षा होती है। संतो के लिए ऊंची–ऊॅची अट्टालिकाएं नहीं बल्कि प्रकृति का खुला वातावरण ही उनका निवास होता है। प्रकृति के

सुरम्य वातावरण में संतों की प्रकृति ही शांत हो जाती है। जो जितना शांत रहता है उसका अन्तःकरण उतना पवित्र रहता है।

भारत हमारा देश है। एक सौ पच्चीस करोड़ की आबादी यहां अमन चैन से रहती है। यहां अनेक धर्मों और जातियों के लोग, अनेक विचारधाराओं वाले लोग सद्भावना पूर्वक रहते हैं। अनेक आक्रमणकारी यहां आये और भारतीय संस्कृति में समा गये। भारत की उदारता प्रसिद्ध है। यहां के लोग अहिंसा, मैत्री, परोपकार, शांति, सद्भावना और समता में विश्वास करते है। देश की रक्षा के लिए मर मिटने के लिए सदैव तत्पर रहते है। देश की रक्षा का उत्तरदायित्व देश की सीमा की रक्षा करने वाले प्रहरियों पर होती है। ये प्रहरी अपनी जान की परवाह न करके देश की रक्षा करते हैं। जब देश सो रहा होता है तो हमारे देश के सैनिक सीमा पर जागते हुए सजग रहते है। यही देश के वास्तविक प्रहरी हैं। सीमा की सुरक्षा करना, देश को बाहरी आक्रमण से बचाना और जल, थल, नभ में पराक्रम दिखलाना इनका कर्त्तव्य है। तिरंगे की रक्षा करना और उसके सम्मान को बनाये रखना इनका प्रमुख कर्त्तव्य है। सीमा के ऐसे प्रहरी जब गर्मी, सर्दी और बरसात में सजग रहते हैं तभी देश सुखपूर्वक नींद ले सकता है। सीमा की सुरक्षा सैनिकों के हांथ में है। वैसे देश की रक्षा में सभी देशवासियों का हाथ रहता है। चाहे वह किसान हो, चाहे शिक्षक हो, चाहे चिकित्सक हो, चाहे राजनेता हो, या व्यापारी। सभी यदि मन से कार्य करते हैं तभी देश सुरक्षित रह सकता है। देश रक्षा में महापुरुषों का भी बहुत बड़ा योगदान है। महापुरुष देशवासियों को एकजुट करने में और उन्हें प्रेरणा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान देश की सुरक्षा में रहता है। साहित्य के माध्यम से लोगों में उत्साह भरना, उन्हें सदैव प्रेरित करते रहना साहित्यकारों का कार्य है।

राष्ट्र कवि दिनकर, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, भारतेन्दु हरिशचन्द्र, पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला इत्यादि साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश रक्षा की भावना लोगों में भरी है। महापुरुषों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द आदि महापुरुषों ने एक सजग प्रहरी का कार्य करते हुए देशवासियों को सदैव प्रेरित किया है। युद्ध केवल अस्त्र–शस्त्रों से ही नहीं लड़ा जाता बल्कि विचारों से भी लड़ा

जाता है। आज के युग में मुख्य लड़ाई विचारों की है। पहले विचारों का वैचारिक युद्ध होता है, इसके बाद उसकी परिणति अस्त्र–शस्त्र के युद्ध में होती है। इसलिए वैचारिक प्रक्रिया युद्ध की चरम परिणति में दिखाई देती है। महात्मा गांधी भारत राष्ट्र के सजग प्रहरी थे। उन्होंने देशवासियों को देश रक्षा के लिए तैयार किया। उनके विचारों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। महात्मा गांधी ने सामान्य जनता को जागृत करके राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाया। उन्होंने सत्य और अहिंसा के अस्त्र का प्रयोग किया। महात्मा गांधी राष्ट्र संत थे। उन्होंने देश के निर्माण के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। इसलिए कहा जाता है कि सैनिक व संत दोनों देश के प्रहरी हैं।